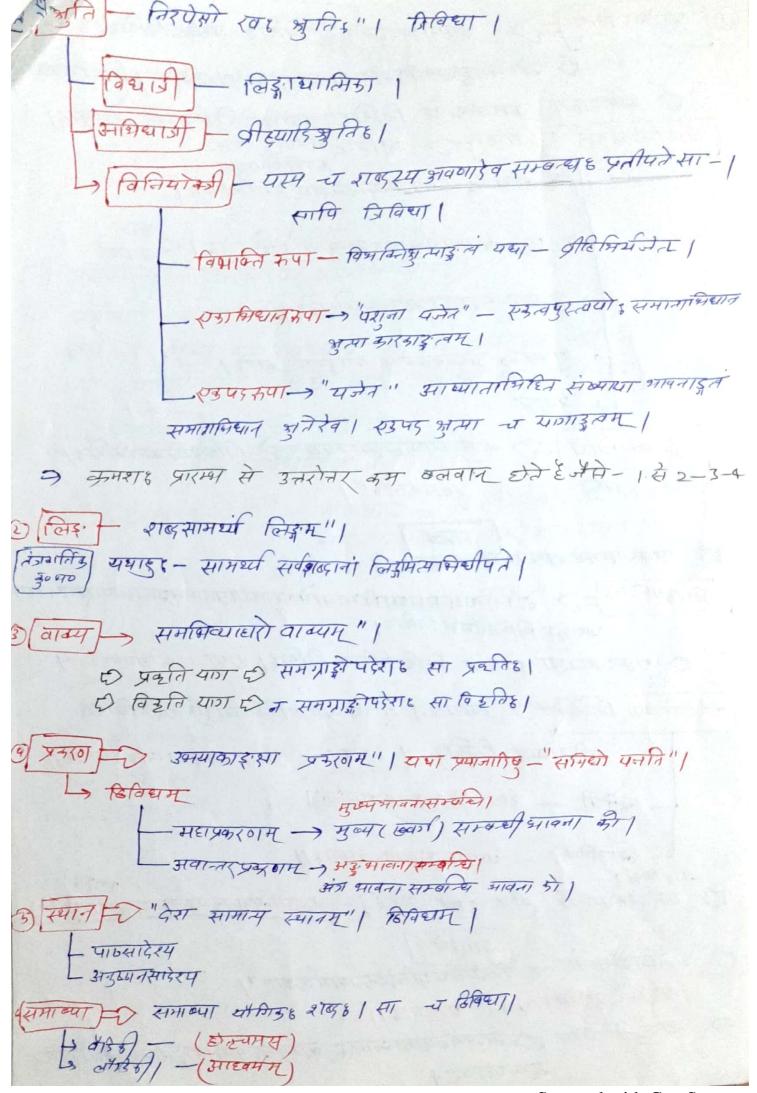
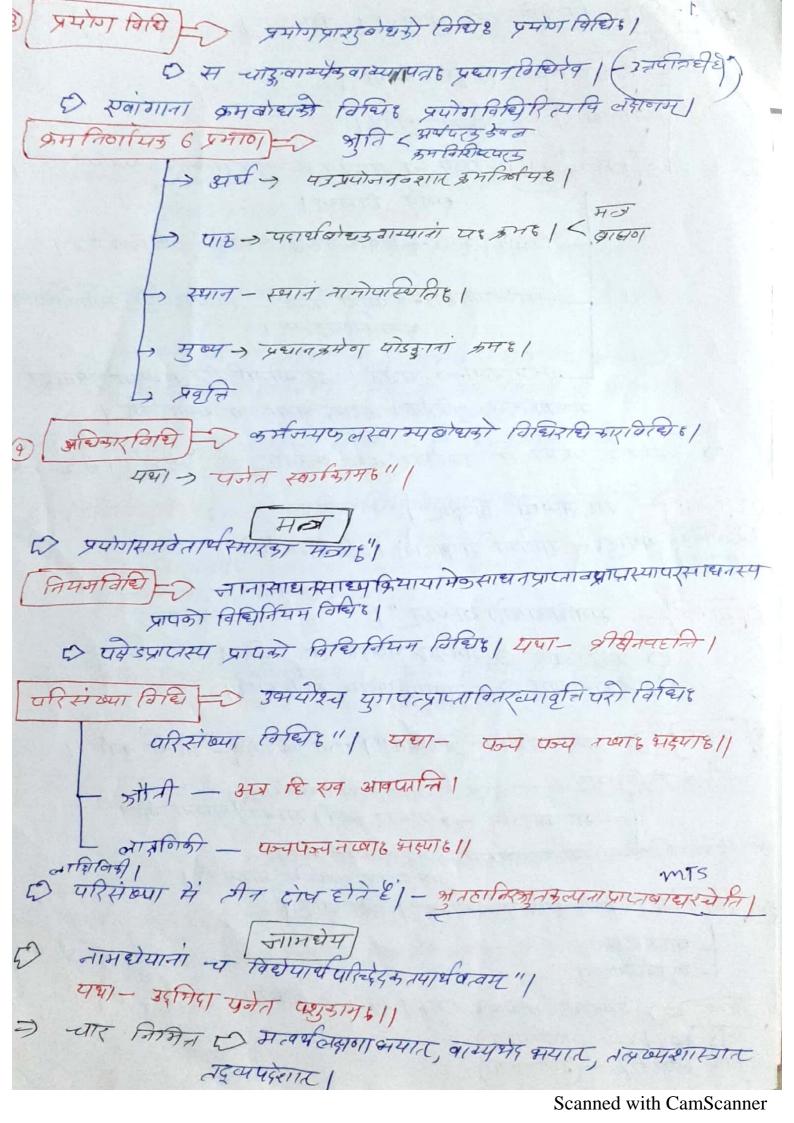
े पूर्व मीमासा - बार्ड अच्याय - हादरा बस्पी 1 अवस्थार ा- "अधानो धार्म जिल्लासा "1 (वहरिष्ट्र) (1) अत अप शब्द वदाहपपुनामधिवसि । (ii) अतः शब्दो हि वेदाहपपनस्य हुरापीलं ब्रेने। स्वाहपोर्श्यन्य हु। इस अहप्यनित्ध)-(11) जिल्लासापरस्य विचारे ताला। वार्म > "वेदप्रतिपादाः प्रयोजनवद्यो शर्मह्"। (अर्थिक) (i) अनचीक्रम माद्रेनचारित्रमातिगर्गाय विद्यानिषाद्य इति। (यम) "योदना लझकारेड्यो धर्मह"। न रड चोदनाशबुस्प वेदमात्रपद्वात । विश्मिवापड़ जिंड. अरा दोनों प्रवर्ग से भावना मही मानी है। प्रावना भवितुर्भवनानुन्तो भावितुर्धापार्विरोधः। सा ढिथा। अपनी आधी O (गार्डी क्र प्रमायन्यमुक्तो भाविष्युत्पित् विशेष शास्त्री भावना"। भ सा न्य लिइ अंग्रेनोच्यते । के विद्र बार्य तु पुरुषामावाल्लिङ गिहुशब्दिन एव अत एव शाब्दी भावना इति व्यविद्रयते। अंग्रात्रममपेयते 🖰 साहम उतिकर्तत्पता 41811 किं सावमेर ? रुप भावपेर ? 3-1941942? आर्थी भावता विडारिका-17 312/a15 2 अग्मि नि प्रयोजनेस्हानिनिनिम्याविषयस्यापार मारप्राम्यामित्र। आर्थी मावना | के सा न आजातवारोगोनी । व्यापादवाद्याता । इतिक्तिया। अंराजयम् रि साहप 4181 54 41941L अन भावपेत कि भावपेत प्रधानांश्यमात्रितिक्तिय यागाडि १

Scanned with CamScanner

वर् नियम्बेषं वायपं वर्षा। स य विश्वमन्त्रताम्थेप्रित्रेष् fale | a नाजाना तार्धनाष्ट्रको वेद्रभागो विद्या । गुनियि पत्र नर्भ मानान्तरेश प्राप्तं तत्र तहुंहरोन गुनमां विद्यते। प्या- दहना जुर्धते।) परं दूर्म विद्यान - अहित्रों जुड़ुमार से होता है। विशिष्ट विद्यो चित्र तुमपमत्रादां तत्र विशिष्टं विद्यते। पपा- सोमेन यमेन) सोमपड में वयुगा से - सोमवता यागे रहें बावपेर। भंडा > ज्योतिष्टो मेन स्वानामो प्रमेत से नर्म विद्यान नर विधानाए। में मत्वर्पत्रम्मा नते ही भावस्पन्ता मही। 3तर > उपर्यस्ता वास्य अधिकार विश्व है, त दि उत्पति विश्व अतह पाण विधान नहीं कर संकर्ता। D विच्छित्र तिथा र अत्रपति विचिवितियोगा थिउर प्रयोग विचि ६ / > उत्पत्ति — अन्नर्व वा क्यान विश्विषी, खोन्ने घट क्यान द्विण प्राविधानकातार्थ - विनियोग- अञ्चिति का सम्बन्ध केव कराति है। अधिकार - अधिकारी की अहताएँ। > प्रयोग उत्पत्ति विश्व "अर्म स्वरूपम छ नेश्वरो निश्चरूप निविश्व "। D अत्र प विश्वी क्रिशिष कर्णा में मान्य । विनियोग विश्वि र अद्भार्तियोग विद्यावितियोग विश्विवितियोग विश्विवित्योग विश्विवित्योग विश्विवित्ये विष्ये विश्विवित्ये विश्विवित्ये विष्ये व यया- दश्मा अहोति।

राज विद्या -व द्यात्व दिस्य साह्यत्वेनात्वयुष्ठ । स्विनिदान्तयत्वेनाति। के 6 सद्या प्रमान का ति लिंदु वास्प्रप्र प्रश्वासमाल्या के पानि। - अति - विद्यम - विद्यार्थी यहिन्द्यां की विभिन्नों की । > Pat. -) a124 > 145(0) 77410 > H41641





पुरेषस्य निवर्तनं वासं निवस्य । । । निर्धायामामन्दित्विक्षान्तिन्त्र ने अवादिवादीय वात हो प्रयोगना प्या > ज कलन्न प्रस्थेर / 312/019 प्रांशस्यानिन्दान्यतर्परं वाव्यमर्पवादश के अर्थनाइ लड़ागा हरा धार्मपाड माना जाता है। अर्थवाद वास्य का मुख्यार्थ में कोई प्रयोजन नहीं रहता है वह अस्वा इसा विद्य और निषेष मा प्रतिपादन मेर्गा है। हिविधम विधिशेष। पुन ६ जिनिस् होता ६ - 1501915 - असप्रमानिसे विरोध् होते पर - अनुवाद - अन्पत्रमान्से मान होने पर भू तार्वाद् प्रमायान्तर्विरोध्य और प्रास्ति दोनो के उत्ताव में नामारोम 4 मिलिलों के उदाहर 0] 1- मत्वर्ध सम्बद्धा अपात - 3 द्वाभाषा पनेत पर्देशमा । 2 - 014475441/1 -> 12041 11 17 3 - रत्प्रथम्बास्तात) अवितहात्र जुहोति। 4 - तद्यपदेश - ३ प्रेनेगिभिपर्त प्रेरी